कला दीर्घा
KALA DIRGHA

October 2013, Volume-14, No. 27

कला दीर्घा
KALA DIRGHA

दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अक्टूबर 2013, वर्ष 14 अंक 27
International Journal of Visual Art, October 2013, Vol. 14, No. 27
Website : www.kaladirgha.com
ISSN : 0976 - 1500

जतिन दास की कलाकृति
Painting of Jatin Das

आवरण–रॉबिन डेविड का मूर्ति शिल्प
Cover - Sculpture of Robin David

Publisher & Distributor
Anju Sinha
1/95, Vineet Khand, Gomti Nagar, Lucknow-206010 INDIA
✆ +91-522-2725942 Email : anju1965@yahoo.com
website : www.kaladirgha.com

Editor (Honorary)
Dr. Awadhesh Misra
C-361, Rajajipuram, Lucknow-226 017, INDIA
✆ +91-94150 22724 Email : misra.awadhesh@gmail.com
website : www.awadhesharts.com

Co-Editor
Dr. Leena Misra

Representative - Delhi
Hemraj

Representative - U.K.
Rakesh Mathur

Representative - U.S.
Smita Narayan

Representative - Korea
Song, In-Sang

The editor is not responsible for the published articles. For any legal dispute the matter will be in the jurisdiction of the Lucknow Courts. Reproduction in any form is prohibited.
Printed at Archana Advertising Pvt. Ltd., New Delhi

Price : ₹ **150/-, US $ 10; UK £ 6,** for institutions- ₹ **250/-** in India

कला दीर्घा
KALA DIRGHA

दृश्य कला की अंतरदेशीय पत्रिका, अक्टूबर 2013 वर्ष 14 अंक 27
International Journal of Visual Art, October 2013, Vol. 14, No. 27
website : www.kaladirgha.com

डॉ. अवधेश मिश्र — 04 — कला को 'आम' के दिल में उतरना चाहिए

डॉ. राजेश कुमार व्यास — 06 — नदी संस्कृति के सौन्दर्य चितराम

अवधेश अमन — 13 — जन सम्वेदनाओं का साक्षात्कार

शम्पा शाह — 16 — आत्मीयता और इत्मीनान का शिल्प

अखिलेश — 20 — रॉबिन के क़िस्से

डॉ. नीरू — 25 — परम्पराओं के कोलाज

मनमोहन सरल — 28 — वास्तुशिल्प के बहाने मानवीय सरोकार

चरन सिंह अमी — 31 — छोटे-छोटे सपनों के यथार्थ का कैनवास

शहेनशाह हुसैन — 34 — अन्तर्लोकवासी कलाकार का कलात्मक काव्यकूट

डॉ. राजेश कुमार व्यास — 38 — सौन्दर्य का सत्यान्वेषण

Ratan Parimoo — 41 — The Compulsive Figurative Painter

Kruti Mukherjee — 44 — Surreal in the Narrative Indian Art

Dr. Meghali Goswami — 47 — A True Lover of Nature

Prasanta Daw — 53 — Life's Experiences find Expresion in Art

Johny ML — 57 — Celebrating Existence in Impudence

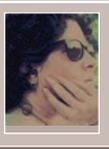
Michal Alma Marcus — 62 — The Stone and Earth Woman

Debdutt Gupta — 66 — A Painter of Emotions

Fred Schmalz — 69 — Perpetual Motion Series

Rikimi Madhukaillya — 75 — Elemental Abstraction

Alice ABELS — 79 — Paradoxical Sculptor

Avneet Gandhi — 85 — Power of Strokes

अवधेश मिश्र, संयोजन १२/२०१३, कैनवस पर तैलचित्र, ७५x१२० सेमी.
Awadhesh Misra, Composition, 12/2013, Oil on canvas, 75x120 cm.

सम्पादकीय

कला को 'आम' के दिल में उतरना चाहिए

हम कलाकार आज केवल 'सौंदर्योपासक' बनकर नहीं रह सकते और न ही पूर्ण रूपेण बाजारोन्मुख। इसके अतिरिक्त भी समाज में अनेक प्रकार के दायित्व/कर्तव्य होते हैं जो एक सामाजिक प्राणी होने के कारण हमें निभाने होते हैं और हम निभाते हैं।

आज काम करने के लिए हमारे समक्ष अनेक तकनीक, माध्यम और पारम्परिक/समकालीन विषय हैं। प्रयोगों की कोई सीमा नहीं है। हम अपने अग्रज कलाकारों द्वारा स्थापित परम्परा का निर्वाह करते हुए समाज/राष्ट्र और मानव मात्र ही नहीं अपितु समस्त जीवों के कल्याण के लिए या उनसे सम्बन्धित अनेक पहलू/विषयों को अपनी रचनाओं का विषय बनाते हुए समाज से जुड़कर सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं। इस दिशा में जहाँ अनेक कलाकारों ने अपने दायित्वों का पूर्ण निर्वहन करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन ऐसी ही भूमिकाओं को समर्पित कर दिया वहीं आज के अनेक प्रयोगशील युवा कलाकार इस सम्वेदना से अछूते नहीं हैं। इस क्रम में जहाँ हम गोया, पिकासो, रवीन्द्रनाथ टैगोर, जैनुल आबेदिन, सोमनाथ होर, चित्त प्रसाद, राम किंकर बैज, अतुल बोस, कमरूल हसन, सतीश गुजराल, के.के. हेब्बार, बेन्द्रे आदि का नामोल्लेख कर सकते हैं वहीं आज के अनेक युवा समकालीन कलाकारों ने अनेक माध्यमों में (न्यूमीडिया सहित) गहन सामाजिक सरोकार रखते हुए सामाजिक/ राष्ट्रीय/ नैसर्गिक पहलुओं को अपने रचना विषय के रूप में केन्द्र में रखा है।

कला 'अभिजात्य' वर्ग की सेविका न बन जाए, इसके लिए यह आवश्यक भी है कि हम समाज से गहरे से जुड़ें और कला लोकाश्रयी हो। बजाय कि हम महानगरों का मुँह देखें, हमें अपेक्षाकृत छोटे- नगरों और कस्बों में जाकर अपना चित्र प्रदर्शन, व्याख्यान, संगोष्ठी आदि के द्वारा कला और समाज के सम्बन्धों में अधिक प्रगाढ़ता लाने का प्रयास करना चाहिए। इससे कला और जन सामान्य के बीच की दूरी निश्चय ही कम होगी और एक दूसरे के प्रति आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी समाप्त होगा। ऐसे में कला अपने सरलीकृत रूप में जहाँ 'आम' के निकट होगी, वहीं उनका सौंदर्यबोध भी उन्नत होगा और इस प्रक्रिया से एक सुसंस्कृत/सभ्य समाज का निर्माण कर सौहार्दपूर्ण ढंग से रहते हुए एक अनोखा उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकेगा। और यदि विषय जन सामान्य के आस-पास के हों, किवदंतियों-किस्से- कहानियों से जुड़े हों, प्रयोगों की मर्यादा बनाए रखते हुए उनकी आस्था से जुड़ें, उनके दिल में उतरें, उनके अपने अनुभवों का आभास कराएँ, उसका हिस्सा बनें या उसकी आवृत्ति के रूप में सामने आएँ तो आम जन भी कला से सहज हो पाएंगे और इसे अपनी 'भाषा' या 'मुहावरा' बना लेंगे। इस दिशा में काम करने में, यानी कलाकारों को उत्प्रेरित/प्रोत्साहित करने में या फिर उनकी कला के